हृदय ज्ञान
कब स्वर्ग पृथ्वी पर आया
Email : info@wisdomfortheheart.in | Web : www.wisdomfortheheart.in

सृष्टि का चरमोत्कर्ष

उत्पत्ति २:१ - २३

प्रस्तावना

उत्पत्ति का पहला अध्याय, ब्रह्मांड को सृष्ट करने के परमेश्वर के रचनात्मक कार्यों पर केन्द्रित है. और पहले अध्याय के अन्तिम कुछ पद तथा दूसरे अध्याय के ४-२३ ये पद, पुरुष और स्त्री को सृष्ट करने के परमेश्वर के चरम रचनात्मक कार्यों पर केन्द्रित है.

यह एक दिलचस्प बात है कि जब मैं ने उत्पत्ति के पहले और दूसरे अध्यायों के अनुच्छेदों पर दोबारा अध्ययन किया, मेरे ध्यान में यह बात आई कि पहले अध्याय में परमेश्वर के लिये जिस नाम का उपयोग किया गया है, वह एक इब्री नाम है, "एलोहीम". यह वो नाम है जो परमेश्वर की सामर्थ्य, उनकी तेजस्वी शक्ति को बयान करता है. और जैसा कि मैं ने अपनी पिछली चर्चा के दौरान बताया कि, जॉन वेस्ली ने क्या लिखा, "परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को सृष्ट किया, और इसके लिये उन्हें अधिक कोशिश भी नहीं करनी पड़ी"

हां, यह सही है - परमेश्वर के पास इतनी सामर्थ्य है, कि उन्होंने केवल अपने शब्दों से सभी को सृष्ट कर दिया. इस पाठ्य में "एलोहीम" नाम का उपयोग किया गया है, और यह उनकी सामर्थ्य को दर्शाता है.

हालांकि, जब हम परमेश्वर द्वारा पुरुष और स्त्री को सृष्ट करने का विवरण पढ़ते हैं, उस समय हमारा परिचय एक नये नाम के साथ किया जाता है - "यहोवा".

'यहोवा' नाम के दो अर्थ

गौर करने योग्य है कि यहोवा नाम के दो अर्थ है.

एक व्यक्तिगत परमेश्वर

१. यहोवा का तात्पर्य, व्यक्तिगत परमेश्वर है.

यहोवा यह नाम, मानवजाति के लिये परमेश्वर की वाचा के प्रेममय परवाह के सम्बन्ध में है. क्या यह एक दिलचस्प बात नहीं कि जब वे पुरुष और स्त्री को सृष्ट करने का विवरण प्रस्तुत करते हैं, तब उनका नाम बदल जाता है. अब यह नाम, उनकी भव्य, वैभवशाली सामर्थ्य के संदर्भ में नहीं है, परन्तु एक प्रेमी परमेश्वर तथा व्यक्तिगत परमेश्वर के संदर्भ में हैं.

अपनी प्रतिज्ञा (वाचा) का पालन करने वाले परमेश्वर

२. यहोवा का संदर्भ, अपनी वाचा का पालन करने वाले परमेश्वर से भी है.

यह नाम, मानवजाति के साथ परमेश्वर की वाचा पर जोर देता है. यह एक ऐसी वाचा है जो न तो कमजोर है और न ही स्वकेन्द्रित है; यह एक ऐसी वाचा है जो अनन्तकाल तक टिकने वाली है, बलिदान देने वाली है. और यही विचार इस अनुच्छेद में प्रस्तत किया गया है, क्योंकि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को सृष्ट किया, यह जानते हुए कि वे पाप करने वाले हैं, यह जानते हुए कि उनका पतन होने वाला है. परमेश्वर जानते थे कि मनुष्य और स्त्री को छुटकारा दिलाने वाले कि जरूरत पड़ेगी. इसके बावजूद भी वाचा का पालन करने वाले परमेश्वर ने उनको अस्तित्व में लाए, मानो यह कह रहे हो, "मैं तुम्हारे लिये छुटकारा दिलाने वाले का प्रबन्ध भी करूंगा."

अब, अध्याय २ के अन्त में, इसी विचार को ध्यान में रखते हुए वे पुरुष और स्त्री को एक साथ ले आएंगे. जिस प्रकार की वाचा परमेश्वर तथा पुरुष के बीच होनी है, उसी प्रकार की वाचा, पुरुष और स्त्री के बीच होनी चाहिए. यह कमजोर नहीं है, यह स्थायी स्वरूप की है, यह स्वकेन्द्रित नहीं है. जिस प्रकार परमेश्वर की वाचा, उनके द्वारा सृष्ट किए गए सभी के साथ है, उसी प्रकार की वाचा मनुष्य और उसकी पत्नी के बीच होनी चाहिए.

परमेश्वर ने 'अपने स्वरूप के अनुसार' पुरुष और स्त्री को सृष्ट किया

मैं चाहता हूं कि आप इस बात पर गौर करें कि जैसे-जैसे हम उत्पत्ति का पहला अध्याय आगे पढ़ते जाते हैं, उसमें आपको बदलाव नजर आएगा. जब हम पहले अध्याय पर अध्ययन कर रहे थे, आपके ध्यान में एक बात आयी होगी, कि सभी बातें को, सभी जीवों को सृष्ट करते समय, परमेश्वर ने केवल शब्दों का प्रयोग किया था. बार-बार - पद ३,६,९,१४ और २० में वे कहते हैं,

"तब परमेश्वर ने कहा..."

लेकिन अब पद २६ में बदलाव को देखें,

"फिर परमेश्वर ने कहा, <u>हम</u> मनुष्य को अपने स्वरूप के अुनसार अपनी समानता में बनाएं..."

ये ऐसा है मानो त्रियेक परमेश्वर, एक साथ होकर यह कह रहे हो, कि वे मनुष्य को सृष्ट करने पर है,

हम, नये नियम के लेखन से जान गए हैं कि वे वास्तव में यीशु मसीह थे तथा यीशु मसीह के शब्द थे जिनके द्वारा इस ब्रह्मांड और मनुष्य की सृष्टि हुई. इस त्रियेक परमेश्वर में वे ही थे जिन्होंने इस सृष्टि की रचना का कार्य किया.

यद्यपि, यह एक दिलचस्प बात है कि अब वे अपने शब्दों अपनी भाषा को बदल रहे हैं, अगले वाक्यांश को देखें,

"हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं..."

यह एक शारीरिक स्वरूप नहीं है, क्योंकि परमेश्वर एक आत्मा है. यह कहते हुए वे इस वास्तविकता को बयान कर रहे हैं कि मनुष्य को एक मन, भावनाओं, स्वयं की इच्छा, परमेश्वर के समान अनश्वरता के साथ सृष्ट किया जाएगा. मनुष्य को परमेश्वर की समानता में बनाया जाएगा.

भाइयों और बहनों, आप इसलिये हंस सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर हंस सकते हैं. उन्होंने आपको हंस पाने की योग्यता में अपनी समानता में बनाया है. आप इसलिये रो सकते हो क्योंकि परमेश्वर आंसू बहा सकत हैं. उन्होंने आपको अपने स्वरूप में बनाया, रो पाने की क्षमता के साथ. आप इसलिये निर्णय ले सकते हो, प्रेम कर सकते हो, तथा जो आप करते हो वह इसलिये कर सकते हो क्योंकि आपको आपके सृजनहार परमेश्वर की समानता में ही बनाया गया है. आपको जो काम परमेश्वर ने करने के लिये दिए हैं, वह काम आप करने के योग्य हो क्योंकि आपका चरित्र, परमेश्वर के चरित्र से मेल खाता है.

अब पद २७ पर ध्यान दें,

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया,...

(इस पर गौर करके, रेखांकित करें)

... नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की.

परमेश्वर ने नर और नारी, दोनों को अपने ही स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया. वे दोनों की अनश्वर आत्माएं हैं. वे खिलौने नहीं हैं, वे कोई वस्तु नहीं हैं, वे अमर हस्तियां हैं, नर और नारी, दोनों ही.

इसी पद में, इस बात पर भी गौर करें कि परमेश्वर, एक लिंग की कल्पना पर भी आघात करते हैं कि नर एवं नारी में कोई अन्तर नहीं है. मैं ऐसी खबरों को सुनकर सन्न रह जाता हूं जो इस धारणा को समर्थन देती हैं कि लड़के, लड़कों की तरह इसलिये बर्ताव करते हैं तथा लड़कियां, लड़कियों की तरह इसलिये बर्ताव करती हैं क्योंकि जब वे छोटे ही थे, तब उनके माता-पिता ने उनका लालन-पालन उसी रीति से किया. वे छोटे लड़के के हाथ में हथोड़ा थमाते हैं - और बाद में पछताते हैं कि उन्होंने वैसा क्यों किया; और छोटी लड़की के हाथ में गुड़िया थमाते हैं. और उनके माता-पिता के कारण ही, उनका बर्ताव वैसा हो जाता है. यह पद हमें बताता है कि परमेश्वर ने उन्हें नर के रुप में उत्पन्न किया, सभी मरदाना विशेषताओं के साथ; और नारी को, सभी स्त्रीसम्बन्धी गुणों के साथ.

मेरी पत्नी और मेरे लिये यह एक अत्यंत आनन्द की बात है कि हमें बेटे और बेटी, दोनों के अभिभावक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. हमारे बच्चों में यह भिन्नता देखकर हमें बड़ा अद्भुत महसूस होता था. लड़कों का बर्ताव करने का तरीका अलग होता हैं- फिर भी उनका नमूना एक समान ही होता है- सामान्यतः तोड़-फोड़ करने वाला. लड़के आखिर लड़के ही होते हैं! हमारी लड़कियों की सोच कुछ अलग ही होती है. जब वे छोटी होती है, तभी से अपने स्त्री स्वभाव के गुणों को प्रगट करने लगती है, जो उसे उसकी मां से तथा अपनी जननी मां, हव्वा से प्राप्त होते हैं.

हमारे बेटों और बेटियों में जो फर्क हमें देखने को मिलता है, बड़ा ही लुभावना होता है. मेरा यदि कोई बेटा गिर जाता है, तो मेरी एक साल की बेटी दौड़कर उसके पास जाकर उसका माथा थपथपाती है, मानों ऐसा कह रही हो, "क्या मैं तुम्हारे लिये कुछ ले आऊं, दूध या कोई शरबत? क्या तुम्हें मेरा कोई खिलौना चाहिए?" वह एक छोटी सी मां की तरह बन जाती है. वास्तव में मुझे जो बात सताती है, वो है कि वह अभी से इश्कबाजी कर रही है. हम यहां एक साल की बच्ची की बात कर रहे हैं! वह मेरी ओर देखकर अपना नाक सिकुड़ती है,

अपनी पलकें झपकाती है. उसे लगता है कि वह मेरे साथ भी वैसा ही कर सकती है. और वह कर भी सकती है. उसकी मां कहती है कि उसने मुझे अपने पल्लु से बांध रखा है. यह बात सच नहीं है. भले ही वह मुझे भोजन परोस कर देती है, लेकिन मैं उसे अपने हाथों से खाता हूं, मैं उसके पल्लु से बंधा नहीं हूं!

उनमें यह भिन्नता कितनी स्पष्ट दिखाई देती हैं, जब वे इतने छोटे होते हैं, तब भी. यह ऐसा क्यों हैं? क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें वैसा ही बनाया है. उन्होंने उन्हें नर और नारी करके उत्पन्न किया है.

यह बात, उस धारणा पर भी एक घातक आघात करती है कि समलैंगिकता, एक संतोषजनक रिश्ता हो सकता है. अगर एक पुरुष, पुरुष को संतुष्ट कर पाता, तो परमेश्वर ने एक स्त्री की अपेक्षा एक और पुरुष ही उत्पन्न किया होता. परन्तु उन्होंने एक स्त्री को उत्पन्न किया.

यह सोर विशिष्ट गुण, जो पुरुष और स्त्री को एक दूसरे से भिन्न बनाते हैं, यह परमेश्वर की ही योजना थी. अतः इस भिन्नता को धुंधला बनाने की या मिटाने की कोशिश न करो. अपनी भिन्नता को उदाहरण के साथ प्रदर्शित करें.

यह हमारे देश में चुनाव का वर्ष है, और मुझे बड़ी जोर से हंसी आई जब एक व्यकित ने मुझे चुनाव का एक जोक सुनाया कि हमें हमारे देश के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर किसी महिला की जरूरत नहीं है क्योंकि वे परमाणु हथियारों पर करोड़ों रुपये खर्च नहीं कर सकती. उलटा वे शॉपिंग के लिये निकल पड़ेंगी और यदि उन्हें कम दाम में कहीं परमाणु हथियार मिल जाता है, तो वहां से खरीद कर ले आएगी!

आने वाले दिनों में हम इस भिन्नता पर और अधिक चर्चा करेंगे और किस प्रकार से वे एक दूसरे को सहयोग प्रदान करते हैं, इस पर अपना अध्ययन जारी रखेंगे.

आदम को आकार देना (उत्पत्ति २:१-७)

अब अध्याय २ में, पद ७ पर गौर करें,

और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रखा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया;...

(एक अमर आत्मा)

...और आदम जीवता प्राणी बन गया.

मनुष्य, एक जीवित हस्ती बन गया, या यथार्थ में, वह एक जीवित जीवन बन गया; जिसे कभी भी मृत्यु नहीं आनेवाली थी. यद्यपि उनके प्राण की वाहक, मिट्टी, वापस मिट्टी में मिल जाएगी, परन्तु उनका प्राण सदाकाल के लिये जीवित रहेगा. वह अमर रहेगा. एक दिन वह या तो स्वर्ग में या फिर नरक में रहेगा.

"भूमि से मिट्टी" यह शब्द, इनका शाब्दिक अनुवाद, "मिट्टी का एक गोला" किया जा सकता है. परमेश्वर ने वास्तव में मिट्टी का एक गोला लिया और उसमें से मनुष्य को रचा.

"रचा" यह वही बहुमूल्य शब्द है जिसका प्रयोग भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने किया था जब वह एक कुम्हार का उल्लेख करता है जो एक मिट्टी का गोला लेकर उसे कुम्हार के चक्के पर रखकर एक पात्र की रचना करता है. परमेश्वर ने अत्यंत सावधानीपूर्वक मनुष्यजाति को रचाा और उसके जो सूक्ष्म भेद हैं, वह सारे परमेश्वर के हाथों की कलाकृति है, जब उन्होंने मनुष्य की रचना की.

पिछले सप्ताह मैं ने पढ़ा कि हमारा शरीर, वास्तव में उन्हीं पंन्द्रह या सोहल रासायनिक तत्वों से बना हुआ है, जो मिट्टी में पाए जाते हैं. यह एक कारण है कि क्यों प्राण निकल जाता है और हम मिट्टी में मिल जाते हैं - क्योंकि हमें उन्हीं रासायनिक तत्वों से बनाया गया है. वास्तव में, एक व्यक्ति ने अपने लेख में यहां तक लिखा है कि यदि आप मनुष्य में पाए जाने वाले उन रासायनिक तत्वों को उससे अलग कर ले, तो बाजार में आपको उसकी कीमत २७५/- रुपये मिलेगी. अगली बार यदि आप में या मुझमें कभी घमण्ड आ जाए, तो याद रखना कि आपकी कीमत ३००/- रुपयों से भी कम है.

पिछले सप्तात मैं ने पढ़ने में काफी समय बिताया और इस बात से मैं बहुत खुश हूं. मैं आपको एक पुस्तक से कुछ बाते बताना चाहता हूं और मैं आपको भी वह पुस्तक पढ़ने के लिये प्रोत्साहन दूंगा. उस पुस्तक का नाम है, "भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया". मैं उसे आपके सामने पढ़कर सुनाने में अधिक समय नहीं लूंगा, लेकिन मुझे उतना सब कुछ याद भी नहीं है.

उसमें मैंने मनुष्य शरीर के बारे में कौनसी दिलचस्प बातें पढ़ी, वह मैं आपको बताना चाहूंगा. और मैं चाहता हूं कि आज आपका ध्यान उसी ओर ले जाऊं. हमारी उत्तम रीति से रचना करने के लिये, परमेश्वर ने जिस तरह से समय निकालकर और बड़ी ही सावधानी से अपनी रचनात्मक कृति को अंजाम दिया, उस कलाकृति को मैं और अधिक रचनात्मकता रीति से यहां प्रस्तुत करना चाहता हूं. अपने शरीर के विभिन्न अंगों के विषय में मैं यहां कुछ तथ्य रखना चाहता हूं.

यह शरीर, लगभग 50 बीलियन श्वेत रक्त कोशिकाओं के हर समय तैनात पुलिस बल के साथ हमें मिला है. जो भी जीवाणु हमारे शरीर पर हमला करते हैं, उनके साथ लड़कर यह उन्हें नष्ट कर देते हैं. यह एक

सदा होने वाली क्रिया है जो प्रतिदिन हमारे शरीर में होती रहती है.

हमारी आंखों के भीतर, एक सौ सात मीलियन कोशिकाएं हैं, उनमें से सात मीलियन, त्रिशंकु हैं, जो जब भी प्रकाश की कोई तेज किरण हमारी आंखें के पास से गुजरती है, तब यह तुरन्त हमारे मस्तिष्क को संदेश तत्परता से संदेश पहुंचाती है. बचे एक सौ मीलियन कोशिकाओं को छड़ कहा गया है. वे हज़ारों रंगों की पहचान कर सकते हैं. इन आंखों की कोशिकाओं से मस्तिष्क हो मीलियन की संख्या में एक साथ संदेश प्राप्त होते रहते हैं. मस्तिष्क, इन संदेशों को ग्रहण करता है, उन्हें वर्गों में बांटता है तथा उनको क्रमबद्ध लगाकर जिस चीज़ को आप देख रहे हैं उसकी आपके सामने एक तसवीर तैयार करता है, .

एक साधारण कान, बहुत ही अचंभित करनेवाला है. वह एक सेन्टीमीटर का बीलियन वे भाग आवृत्तियों जितनी धीमी आवाज़ को भी सुन सकता है. तीन हड्डियों की मदद से उसका कम्पन, अन्दरूनी कान को संचारिक किया जाता है. उदाहरण के लिये, जब पियानों पर कोई स्वर बजाया जाता है तो आपके अन्दरूनी कान की हड्डियों का पिस्टन, एक सेकंद में 256 बार कम्पन पाता है. मस्तिष्क, इन कप्पनों का वर्गीकरण करता है तथा उनका एक आलेख तैयार करता है, बदले में वह एक तरंग उत्पन्न करता है और वह हमें एक धुन की तरह सुनाई देता है.

इनकी तुलना में एक नई खोज, जिसने जेनेटिक्स की दुनिया में तहलका मचा रखा है, वह है, डीएनए अणु का अध्ययन. यह एक लड़ है जो एक रस्सी की तरह प्रत्येक कोशिका में रासायनिक प्रक्रिया द्वारा समाई हुई होती है. अब हम इस प्रत्येक लड़ को विभाजित करके या प्रत्येक कोशिका के भीतर जाकर, उसके न्यूक्लीयस में, देखने की कोशिश कर रहे हैं. शरीर के भीतर प्रत्येक कोशिका का एक विशिष्ट उद्देश्य है. इसके बावजूद भी प्रत्येक डीएनए के प्रत्येक कोशिका में शरीर के लाखों जीन्स की सभी सूचनाएं उपलब्ध होती है. अर्थात्, आपके शरीर के जो डीएनए है, उनमें से प्रत्येक के लिये एक विशिष्ट कार्य निर्धारित हे, इसके बावजूद, इन सारी सूचनाओं में प्रत्येक डीएनए जानता है कि शरीर के प्रत्येक डीएनए का कार्य क्या है. हमें बताया जाता है कि डीएनए में इतनी जानकारी शामिल है कि यदि उसे लिखा जाए तो 60 लाख पन्नों की जरूरत पड़ेगी. यह डीएनए इतना सूक्ष्म होता है कि आपके शरीर में जितने भी जिन्स है, वे एक आइस क्यूब में शामिल किए जा सकते हैं. फिर भी यदि इन डीएनए को खोल दिया जाए और एक सिरे से दूसरे सिरे को जोड़कर देखा जाए तो उसकी लम्बाई इतनी होगी कि उसे पृथ्वी से सूर्य तक और सूर्य से पृथ्वी तक चार सौ बार घुमाया जा सकता है.

और हमारी हड्डियां, जो कभी-कभी हमें भद्दी नजर आती है; उन्हें कुछ इस तरह से बनाया गया है कि वे काफी वजन उठा सकती है और भारी काम कर सकती हैं. एक सामान्य मनुष्य, अपने जीवनकाल में अपने पैरों से दुनिया के तीन चक्कर लगा सकता है. यह एक दिलचस्प बात है कि जगत को कोई भी अभियांत्रिक अभी तक ऐसी कोई चीज नहीं बना पाया है जो मनुष्य की हड्डी से मेल खाती हो. वे इस कोशिश में जरूर है कि हड्डी के समान मजबूत, हलकी और कार्यकुशल किसी वस्तु का निर्माण कर सकें. कल्पना करें कि वह लगातार बढ़ती जाती है, स्वयं को चिकनाई उपलब्ध कराती है, उसके कार्य समाप्त होने का कोई समय नहीं है और जब टूट-फूट जाती है तो खुद को ठीक भी कर लेती है.

देखा जाए तो यह हमारे शरीर के कुछ ही तथ्य है. हमारे पास उतना समय नहीं कि हम त्वचा, स्पर्श और स्वाद की अनुभूति के चमत्कार की ओर ध्यान दें या फिर किस प्रकार से हमारे हाथों को बनाया गया है, उस पर मनन करें. एक और बात कि हम ही ऐसे जीवित प्राणी है जिनके पास अंगूठा है, जिसका आकार उस प्रकार का है और जो जिस तरह से चाहे वस्तुओं को पकड़ सकता है. वास्तव में, आयझैक न्यूटन ने लिखा था, "मनुष्य के अंगुठे के सिवाय यदि यहां और कोई प्रमाण नहीं होता, तो मैं परमेश्वर के अस्तित्व कभी भरोसा नहीं करता"

एक और दिलचस्प बात यह है कि जब हम कोई मशीन तैयार कर रहे होते हैं तो जब यह मशीन तैयार की जा रही है और इससे पहले कि उसे काम में लाया जाए, हमें यह पता होता है कि इस मशीन को ठीक से काम करने से पहले हमें उसकी अनेक खामियों को दूर करना होगा. एक अभियांत्रिक, एक व्यक्ति के अवयव संघटन का निरीक्षण कर रहा था. शरीर के उन सभी भागों का, जिनको मिलाकर एक शरीर तैयार होता है- और उसको आश्चर्य से यह कहते हुए सुना गया, "कल्पना करे कि जब परमेश्वर ने पहली बार ही इसे बनाया, तभी से यह सिद्ध रीति से काम कर रहा है!"

कल्पना करें कि जब परमेश्वर ने इसे रचा था, इसमें कोई कमियां या खामियां नहीं थी - जब तक इसका पतन नहीं हुआ.

अदन वाटिका का लगाया जाना (उत्पत्ति २:८-१७)

उत्पत्ति, अध्याय २ के ८ और ९ पद को देखें,

और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई;...

(अदन शब्द का अर्थ, "आनन्द" होता है- यह एक स्वर्ग ही था)

...और वहां आदम को जिसे उस ने रचा था, रख दिया. और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया.

इसके पश्चात, अगले कुछ पदों में नदियों, झरनों और उनके स्थानों का जिक्र है. कुछ लोगों का वास्तव में ऐसा सोचना है कि नदियों के भौगोलिक संदर्भों पर विचार किया जाए तो शायद अदन की वाटिका फारसी खाड़ी के नजदीक ही होगी.

आगे पद १५ को देखें,

जब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे,

इब्री भाषा में "वाटिका" के लिये "गान" शब्द है जिसका शब्दशः अर्थ है "घेराव". यह एक स्वर्ग था - वास्तव में, पृथ्वी, एक स्वर्ग ही थी, और इसके बावजूद, परमेश्वर ने इस स्वर्ग के अन्दर एक घेराव बनाया, जिसकी सीमाएं या हदें थी. यह बहुत उपजाऊ थी, यह एक ऐसी जगह थी जहां मनुष्य अपना सारा जीवन, देखभाल, शासन, अधिकार जमाने तथा आनन्द लुटने में बीता दें. यह अदन था, यह स्वर्ग के अन्दर एक वाटिका थी जहां आदम और हव्वा को अपना जीवन बिताना था.

दो वृक्षों का महत्व

अब हमने पहले ही दो विशिष्ट वृक्षों का उल्लेख पढ़ा है. मैं आपको इन दो वृक्षों की विशिष्टता या महत्व को बताना चाहूंगा.

जीवन का वृक्ष, अनश्वरता का प्रतीक है

१. जीवन का वृक्ष, अनश्वरता का प्रतीक है.

यह वृक्ष, उस बात का प्रतीक है कि नर और नारी अनन्तकाल तक जीवित रहेंगे. हम जानते हैं कि अनन्तकाल तक जीवित रहने की क्षमता, प्रत्यक्ष रुप से परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुई थी, इसके बावजूद भी उन्होंने उसके प्रतीक के रुप में उस वृक्ष का इस्तेमाल किया. उस पेड़ का फल खाना, वह साधन, तरीका या रास्ता होगा जिसके द्वारा हम सदाकाल तक जीवित रहेंगे.

भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष, चुनाव कर पाने का प्रतीक है

२. वहां एक और वृक्ष लगाया गया है जिसे भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष कहा गया है, और यह हमारे चुनाव का प्रतीक है.

परमेश्वर ने नर और नारी के सामने चुनाव या विकल्प क्यों रखा? क्योंकि परमेश्वर, रोबोट नहीं चाहते थे, यहां तक कि वाटिका में भी नहीं. अतः उन्होंने पुरुष और स्त्री को चुनाव कर पाने की क्षमता के साथ सृष्ट किया.

अब, अपने सर्वलौकिकता में, परमेश्वर जानते थे कि नर और नारी आखिर क्या चुनेंगे. फिर भी, अपने ज्ञान से उन्होंने उनके समक्ष इस बात का चुनाव रखा कि या तो वे उनकी आज्ञा का पालन करे या फिर अवाज्ञा करें.

परमेश्वर एक सहभागिता चाहते थे, उस वाटिका में आदम और हव्वा के साथ उस समय भी. सहभागिता, यह दो तर्फा आवाजाही का मार्ग होता है - आदम और हव्वा, परमेश्वर से प्रेम रखेंगे और परमेश्वर उनसे प्रेम रखेंगे.

यह वृक्ष, देखा जाए तो एक परीक्षा थी, जैसा की आप जानते हैं, जब मनुष्य ने फल खा लिया, तब उसे जीवन के उस वृक्ष से दूर रखा गया. मैं हमेशा आश्चर्य करता हूं कि ऐसा क्यों. मुझे लगता है कि शायद मैं ने इसका उत्तर ढूंढ लिया है - इसलिये कि जिस बात का वह प्रतिनिधित्व करता था. आदम और हव्वा उस पेड़ से फल खा चुके थे और इस प्रकार उन्होंने पाप किया था. इसके पश्चात यदि वे जीवन के वृक्ष से फल खा लेते तो वे सदाकाल के लिये अपनी पापी अवस्था में ही जीवन बिताते.

एक आशीष जो परमेश्वर ने हमें दी है, वो है मृत्यु. हम हमेशा पापी बनकर नहीं जीएंगे. जैसे कि हमारे पापों की क्षमा हो चुकी है, लेकिन जिस प्रकार आज हम जी रहे हैं, उस प्रकार से अनन्तकाल तक जीवित रहना, एक अत्यंत त्रासदीपूर्ण जीवन होता. मृत्यु से हमारे लिये स्वर्ग के द्वार खुल जाएंगे जहां हमें महिमामय और सिद्ध शरीर प्रदान किए जाएंगे और हमारे उद्धारकर्ता के प्राणों के समान ही हमारे प्राण भी होंगे, उसकी परिपूर्णता में.

इसलिये परमेश्वर ने उनको उस पेड़ से अलग रखा और उन्हें एक और चिन्ह दिया - क्षमा का चिन्ह. जो वस्त्र परमेश्वर ने उन्हें पहनने के लिये दिए, उसके लिये पशुओं की बलि चढ़ाना पड़ा. उनके पापों के प्रायश्चित के रुप में, पशुओं का लहू बहाना पड़ा.

हव्वा की मूरत तैयार करना (उत्पत्ति१८-२३)

अब, पद १८अ में परमेश्वर के पहले निराशाजनक वक्तव्य की ओर ध्यान दें,

फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,...

(सबसे पहली बार परमेश्वर के असन्तोष पर गौर करें)

"... आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं;..."

इस पद की जिस बात ने मुझे अचंभित किया कि, देखा जाए तो आदम, एक सिद्ध वातावरण में जीवन व्यतित कर रहा था. उसका काम भी बहुत बढ़िया था - जो उसे पसंद भी था. वह सुबह उठकर जाने के लिये तैयार होता था, वाटिका की देखरेख करने के लिये तैयार होता था. परमेश्वर के साथ उसका बहुत अच्छा रिश्ता कायम था. वह परमेश्वर के साथ सहभागिता रखता था, बातचीत करता था, लेकिन परमेश्वर इन सब बातों पर गौर करने के बाद कहते हैं, "अच्छा नहीं!"

अतः परमेश्वर, अपने उचित समय पर, एक स्त्री को सृष्ट करने की योजना बनाते हैं. परमेश्वर के विषय में जो बात मुझे बहुत पसंद है, वह है उनका सही समय का चुनाव करना. वे दौड़कर आदम के पास नहीं पहुंचे और उससे नहीं पूछा, "आदम, क्या तुम्हें एक पत्नी की जरूरत है? मैं तुम्हारे लिये एक बनाऊंगा."

आदम ने कहा होता, "क्या कहा आपने, मुझे क्या चाहिए? मुझे एक पत्नी की जरूरत है? पता नहीं, मैं कह नहीं सकता."

उसके पश्चात, परमेश्वर, जो एक सिद्ध जोड़ी तैयार करने वाले हैं, अपना कार्य करते हैं. क्या आप गौर करोगे कि अगले कुछ पदों में परमेश्वर क्या करते हैं, पद १९अ पर ध्यान दें,

और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं...

अब ध्यान दें कि पद १८ब में परमेश्वर ने आदम के लिये एक साथीदार बनाने का निर्णय ले चुके हैं.

...मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए.

उन्होंने आदम को अभी तक जानकारी नहीं दी है. लेकिन उससे पहले, पद १९ब तथा २०अ में उन्होंने,

... भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम मे पास ले आया...

(जाहिर है कि जोड़ी में ले आए)

... कि देखे, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वहीं उसका नाम हो गया. सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; ...

यहां आदम, सभों को नाम देता है, फिर एक जोड़ी आती है, और आदम अपनी बुद्धिमता से उनकी विशेषताओं पर गौर करता है. वास्तव में, मूल पाठ्य में ऐसा आशय है कि उसने उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनको नाम दिए. वह बुद्धिमान था, और वो सबको नाम दे रहा था. और फिर आदम, अन्तिम पायदान पर पहुंचता है और मानों उसके ही मन में ऐसा विचार आता है, पद २०ब में,

...परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सकें.

दूसरे शब्दों में, आदम को यह बात धीरे धीरे समझ आने लगी. उसने सैकड़ों पशुओं, पक्षियों के नाम रख दिये थे और अब वो तलाश में है, "देखते हैं, यह सब के सब दो-दो हैं, और मेरे समान मैं अकेला ही हूं."

परमेश्वर यहां क्या कर रहे हैं? वे उसको इस बात से अवगत करा रहे हैं! वे उसको उस स्थिति तक ले जाने की कोशिश कर रहे हैं, जहां उसको अहसास हो कि वह अकेला ही है; उसके पास उसका जोड़ीदार नहीं है. फिर पद २१ और २२अ में,

तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तक उस ने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया. और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया;

अब, पद २२ में जिस शब्द का अनुवाद "बना दिया" में किया गया है, वह उस शब्द से अलग है जब आदम को सृष्ट किया गया था. यह शब्द एक अत्यंत सुन्दर शब्द है जिसका अनुवाद हम "तराशा गया" में कर सकते है. यह ऐसा है मानो कि परमेश्वर, किसी उस्ताद कि तरह, जो एक खूबसूरत तसवीर तैयार करने वाले हैं, उस पसली और मांस पर झुकते हुए एक खूबसूरत स्त्री को तराशते हैं - उस स्त्री को जो आदम की जोड़ीदार बनने वाली थी.

पसली का महत्व

हमें इस सवाल का जवाब तलाशना है, "पसली ही क्यों?" परमेश्वर ने एक स्त्री को बनाने या तराशने के लिये पसली का ही क्यों इस्तेमाल किया? मैं आपको इसके तीन कारण दूंगा.

मनुष्यजाति की एकता को दर्शाने के लिये

१. पहला कारण, मनुष्यजाति की एकता दर्शाने के लिये.

हम सब आदम के वंशज है. रोमियों की पुस्तक का जब हम अध्ययन करेंगे, तब हम इस जबरदस्त सच्चाई से रूबरु होंगे. क्योंकि हम सब आदम में, आदम के द्वारा और आदम के माध्यम से ही है. हम सब पापी है; हम सब में आदम का ही स्वभाव है. परन्तु दूसरा आदम आनेवाला है, जो यीशु मसीह है. और हम जो उनमें है, दूसरे आदम में, हमें क्षमा किया

जाएगा. यह सच्चाई, नये नियम में बाद में प्रगट की जाएगी, जो एक धर्मविज्ञान संम्बन्धी सच्चाई है.

स्त्री जाति की प्रतिष्ठा की गारंटी देने के लिये

२. स्त्री जाति की प्रतिष्ठा की गारंटी देने के लिये.

स्त्रियों को किसी घटिया वस्तु से नहीं बनाया गया. उसे भी उसी वस्तु से बनाया गया जिस से आदम को बनाया गया. आपके दिमाग में ऐसी तसवीर न बनाओ कि परमेश्वर ने केवल एक हड्डी या पसली ही ली. वास्तव में उन्होंने उस पसली के इर्द गिर्द का मांस और लहू भी लिया. उन्होंने एक टुकड़ा लिया और उसी वस्तु से स्त्री को बनाया जिससे उन्होंने आदम को बनाया था.

एक गहरी रिश्तेदारी का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये

३. तीसरा कारण, एक गहरी रिश्तेदारी का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये.

परमेश्वर ने पैरों में से हड्डी नहीं निकाली, जैसा कि आपने सुना या पढ़ा होगा; ताकि आदमी उसे पैरों के नीचे कुचल दे, जैसे कि वह उसके ऊपर या उससे बेहतर है. परमेश्वर ने उसके मस्तिष्क से कुछ नहीं लिया, जिससे कि वह अपने आप को पुरुष से बेहतर या ऊपर समझे. परमेश्वर ने आदम के हाथ में से हड्डी नहीं ली, जिससे कि वह उसकी दासी बनकर रहे और उसके सारे काम वह खुद ही करे. परमेश्वर ने आदम की बगल से हड्डी ली, जो एक बहुत ही नजदीकी सम्बन्धों का उदाहरण है. वह उसके हरदम बगल में खड़ी रहेगी. वह उस वाटिका, उस स्वर्ग की रानी होगी और आदम वहां का राजा. हम हमारे अगले सवाल में इसे और विस्तृत बनाएंगे.

अगला अनुच्छेद मुझे बेहद पसंद है, पद २२ से २३अ तक,

> *और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया. और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है...*

अब इसमें अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करे. मुझे नहीं लगता कि आदम ने जो सबसे पहली बात कही होगी, वो यह बात कही होगी. पाठ्य यह नहीं कहता कि सबसे पहले आदम ने ऐसा कुछ कहा. मैं सोचता हूं कि जो पहली बात वहां हुई होगी, वो ये कि आदम ने अपने जोड़ीदार को देखा होगा और कहा होगा, "वाह!"

संपूर्ण मानव इतिहास में पहली बार किसी के मुंह से सीटी निकली होगी! कितनी खूबसूरत है ये! और उसके पश्चात, उन्होंने आपस में घंटों बातें की होगी, मानों कि वे कोई लम्बे समय से बिछड़े हुए साथी हो. मुझे लगता है कि यहां पद २३ में जो कुछ हो रहा है कि यहां आदम, उस स्त्री का परिचय अन्य पशुओं के साथ करा रहा है. ऐसा कि मानो वो कह रहा हो, "अब मेरी बात सुनो, अभी यह..."

(वास्तव में मूल इब्री भाषा का शाब्दिक अनुवाद ऐसा किया जा सकता है, "अब यह आखिर,")

> *"... मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है..."*

पद २३ब को आगे पढ़ें,

> *...सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है.*

मेरा ऐसा मानना है कि परमेश्वर ने जो कुछ सृष्ट किया था, उन सभों के साथ स्त्री का इस तरह से परिचय कराया गया.

लागूकरण

इस पाठ्य में आज हम यहां तक ही अध्ययन करेंगे. मुझे इस अध्याय में जो बात आकर्षित करने वाली लगी, उनमें से कुछ बातों को हम लागू करते हैं.

अदन की वाटिका - एक ऐसी जगह जहां मनुष्यजाति चुनाव करेगी कि वह किसकी आज्ञा का पालन करेगी

१. पहला लागूकरण, अदन की वाटिका में ही देखने को मिलता है. अदन की वाटिका, पुरुष और स्त्री, एक ऐसी जगह का प्रतिनिधित्व करेंगे जहां मानवजाति निर्णय लेगी कि वे किसकी आज्ञा का पालन करेगी - उत्पन्न करने वाली की या प्रलोभन में डालने वाली की.

यह मुझे एक और वाटिका का स्मरण दिलाती है, जहां यीशु मसीह, परमेश्वर की इच्छा से संघर्ष कर रहे थे. हमें लूका के २२ वे अध्याय में बताया गया है कि उनके पसीने की बून्दें मानो ऐसी थी जैसे कि उनका लहू टपक रहा हो. और अन्ततः, पद ४२ब में, उन्होंने दर्दभरे प्राणों के साथ कहा,

> *...मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो.*

न तो हम अदन की वाटिका में है और न ही गतसमनी बाग में, परन्तु मेरे भाइयों और बहनों, मैं सोचता हूं कि मैं और आप उसी तरह की एक वाटिका में हैं. हम एक ऐसी जगह में हैं जहां से हम चुनाव कर सकते हैं कि हम किसका अनुसरण करेंगे, हम किसकी आज्ञा का पालन करेंगे - उत्पन्न करने वाले की या प्रलोभन में डालने वाले की.

वृक्ष - मसीह के द्वारा अनन्तकाल की चंगाई या अनन्तकाल की मृत्यु के चुनाव का प्रतीक

२. इस अध्याय में वाटिका ही केवल एक चीज़ नहीं जो यीशु मसीह की ओर इशारा करती है - बल्कि वृक्ष भी उनकी ओर इशारा करता है. संपूर्ण पवित्रशास्त्र में किसी शक्तिशाली सच्चाई को दर्शाने के लिये, वृक्ष या पेड़ का उपयोग किया गया है. वाटिका का वृक्ष, चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है.

एक और समय में, जब मूसा जंगल में था, उस समय इस्राएल की संतान, विद्रोह पर उतर आए थे. हमें गिनती के २१ वे अध्याय में बताया गया है कि परमेश्वर ने उनको डसने के लिये जहरीले सांपों को भेजा था. तब उन्होंने मूसा से कहा था कि वो एक सर्प बनाए और उसे एक पेड़ पर टंगा दे और जो कोई उस पेड़ की ओर देखेगा, उसे चंगाई प्राप्त होगी. वह चंगाई का प्रतिनिधित्व कर रहा था और जिन्होंन उसकी ओर देखा, वे चंगे हो गए.

हालांकि, मैं भी कलवरी के विषय में सोचता हूं, १ पतरस, अध्याय २, पद २४ में अभिलिखित है,

वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए.

मेरे मित्रों, आपके जीवन में भी एक वृक्ष है. या तो आप कलवरी नाम के उस वृक्ष के समक्ष, क्षमा किए हुए एक व्यक्ति की तरह खड़े हो या फिर आप उसके समक्ष पश्चाताप न करनेवाले एक अविश्वासी की तरह खड़े हो. यीशु को लिये एक वृक्ष आज आपके समक्ष ऊंचा उठाया गया है, चुनाव हमें करना है. चुनाव करना हमारे हाथों में है कि या तो हम उनका स्वीकार करें, उस प्रायश्चित को अपनाकर उसे ग्रहण करें; और उन्हें अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करें.